SHODH SAMAGAM
ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

दिव्यांग बच्चो से सम्बंधित समस्याएं

सुनीता बेक, (Ph.D.),
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत
रूचि पांडेय, शिक्षा विभाग,
कृति स्कूल ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors
सुनीता बेक, (Ph.D.),
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत
रूचि पांडेय, शिक्षा विभाग,
कृति स्कूल ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट,
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 13/09/2022
Revised on : -----
Accepted on : 20/09/2022
Plagiarism : 02% on 13/09/2022

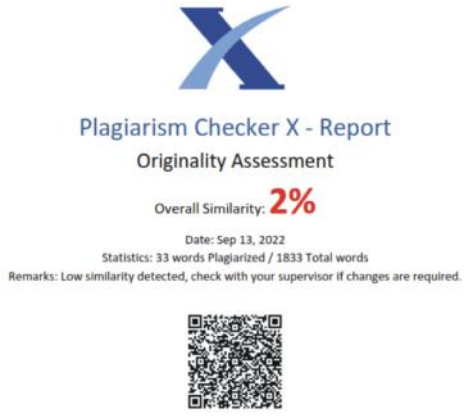

शोध सार

'निः शक्तजन भी अंग हमारे, अवसर का उपहार चाहिए
मिले इन्हे अधिकार समान, दया नही सम्मान चाहिए।''

यह सृष्टि सभी को एक प्रकार समझती हैं, परन्तु सृष्टि मे कुछ व्यक्ति जो की अपंग या विकलांग हैं, वे समाज मे घृणा के पात्र नही है। हमे उनके साथ सहृदयता पूर्वक मानवता का व्यवहार करना चाहिए अर्थात् समाज विकलांगो के प्रति सदभाव रखकर उन्हे शिक्षित् व पुरुषार्थी बनाये क्योंकि शिक्षा मे वह अद्भुत शक्ति है जो कि किसी भी व्यक्ति की किसी भी कमी को नयी ताकत की प्रेरणा प्रदान करती है। आधुनिक युग मे यह साबित हुआ है कि विकलांग भी अपनी काबिलियत पर प्रगति कर सकते है। ईश्वर व प्रकृति की ओर से उनमे अगर कुछ कमी हैं तो उनमे कुछ अतिरिक्त शक्ति भी है इसलिये उन्हे विकलांग न कहते हुए विशेष सामर्थ वान व्यक्ति कहना उचित हैं। इसी सन्दर्भ मैं विगत २७ दिसंबर २०१६ को प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने अपने रेडियो संबोधन ''मन की बात'' मे कहा कि विकलांग लोगो के पास एक दिव्य क्षमता होती हैं अतः उनके लिए विकलांग की जगह दिव्यांग शब्द का प्रयोग किया जाना चाहिए। शारीरिक विकलांगता कोई नही चाहता, विकलांग बच्चो को अनेक समस्याओ से जूझना पड़ता है। उनके परिवार, रिश्तेदार, समाज, दोस्त, इत्यादि लोगो को चाहिए कि वे उस बच्चे को उसकी विकलांगता के साथ स्वीकार करे। समाज मे उसका मेलजोल बढ़ाना, उसका जीवन सुखमय बनाने के लिए उसे सहारा देना जरूरी है। प्रस्तुत शोध में दिव्यांग बच्चो के सामाजिक, आर्थिक एवं अकादमिक समस्याओ का अध्ययन किया गया है तथा साथ ही इन समस्याओ का उनकी शिक्षा पर क्या प्रभाव पड़ता है इसका अध्ययन किया गया है।

मुख्य शब्द

दिव्यांग, शिक्षा, मानसिक, आत्मनिर्भर, सामाजिक.

प्रस्तावना

शिक्षा का काम बालक का बहुमुखी विकास करना होता है। प्रत्येक बालक को शिक्षा की आवश्यकता होती है, शिक्षा के द्वारा ही वह अपनी कमजोरियों को दूर कर के आगे बढ़ने का अवसर प्राप्त करता है। यह शिक्षा सामान्य बालको के साथ साथ शारीरिक दिव्यांग बालको को भी अपनी कमजोरी (दिव्यांगता) को हरा कर आगे बढ़ने के प्रेरणा देती है।

दिव्यांग बालक शारीरिक रूप से कमजोर अवश्य होते है परन्तु उनमे अपार योग्यता छिपी होती है तथा इन योग्यता के द्वारा वह उच्च उपलब्धि प्राप्त कर सकते है, परन्तु यह योग्यता उनकी सामाजिक आर्थिक एवं अकादमिक समस्याओ के कारण विकसित नहीं हो पाती तथा यह समस्याएं दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को भी प्रभावित करती है। प्रस्तुत शोध पत्र में सामाजिक आर्थिक एवं अकादमिक समस्याओ का दिव्यांग विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

शोध प्रविधि

शोधकर्ता द्वारा अनुसंधान हेतु चयन की गई विधिः शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत अनुसंधान हेतु सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है, अतः सर्वेक्षण विधि किसे कहते है, इसका प्रशासन किस प्रकार होता है आदि के सबंध में जानना आवश्यक है।

सर्वेक्षण विधिः अनुसंधान की समस्या से जुड़े तथ्यों की जानकारी जब अनुसंधानकर्ता द्वारा प्रत्यक्ष अवलोकन या प्रत्यक्ष संपर्क द्वारा ली जाती है तब उस विधि का सर्वेक्षण विधि कहा जाता है।

उपकरण

किसी समस्या के अध्ययन हेतु नवीन तथा प्रदत्त संकलन के लिए अथवा नवीन क्षेत्रों का उपयोग करने हेतु यंत्रो तथा उपकरणों की आवश्यकता होती है। इन्ही यंत्रो को उपकरण कहते है। प्रस्तुत शोध प्रबंध में शोधकर्ता द्वारा स्वनिर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया गया है ।

उद्देश्य

1. दिव्यांग विद्यार्थियों के सामाजिक समस्याओ का शैक्षणिक उपलब्धि स्तर पर प्रभाव का अध्ययन करना।
2. दिव्यांग विद्यार्थियों के आर्थिक समस्याओ का शैक्षणिक उपलब्धि स्तर पर प्रभाव का अध्ययन करना।
3. दिव्यांग विद्यार्थियों के अकादमिक समस्याओ का शैक्षणिक उपलब्धि स्तर पर प्रभाव का अध्ययन करना।
4. दिव्यांग विद्यार्थियों के लिंग का शैक्षणिक उपलब्धि स्तर पर प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएं

H_1: सामाजिक समस्याओ का दिव्यांग विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि स्तर पर प्रभाव पाया जायेगा।

H_2: आर्थिक समस्याओ का दिव्यांग विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि स्तर पर प्रभाव पाया जायेगा।

H_3: अकादमिक समस्याओ का दिव्यांग विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि स्तर पर प्रभाव पाया जायेगा।

H_4: लिंग का प्रभाव दिव्यांग विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि स्तर पर दिखाई देगा।

अध्ययन का परिसीमन

इस लघु शोध में परिसीमन निम्नलिखित हैं:

- प्रस्तुत अध्ययन के लिए रायपुर जिले के शहरी क्षेत्रो का चयन किया जाएगा।

- रायपुर जिले में स्थित विद्यालयों में अध्ययनरत नवी कक्षा के दिव्यांग विद्यार्थियों का चयन किया गया है।
- इस अध्ययन हेतु छात्र–छात्राओं दोनों का चयन किया गया है।
- विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के लिए उनकी आठवीं कक्षा में प्राप्त प्राप्तांको को लिया गया है।
- इस अध्ययन हेतु स्व निर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया गया है।
- प्रस्तुत अध्ययन में शारीरिक दिव्यांग विद्यार्थियो की सामाजिक आर्थिक तथा अकादमिक समस्याओ का अध्ययन किया जाएगा।

निष्कर्ष

परिकल्पनाये तथा निष्कर्ष निम्नलिखित हैः

परिकल्पना क्रं. 1

सामाजिक समस्याओ का दिव्यांग विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि स्तर पर प्रभाव पाया जायेगा।

सामाजिक समस्याओ से सम्बंधित प्रसरण विश्लेषण, (ANOVA) सारणी

	वर्गों का योग	Df	माध्यो का वर्ग	F
समूहों के बीच	1099.64	9	122.18	4.65
समूह के भीतर	1313.55	50	26.27	
कुल	2413.19	59		

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

निष्कर्षः F तालिका का 0.05 सार्थकता स्तर मान 2.07, F तालिका का 0.01 सार्थकता स्तर मान 2.79, उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि F का मान 4.65 है जो कि F तालिका मान 0.05 और 0.01 से सार्थकता स्तर से अधिक है, अतः हमारी परिकल्पना स्वीकृत हुई।

निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों कि सामाजिक समस्याओ का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है, यदि सामाजिक समस्याएं कम है तो शैक्षिक उपलब्धि स्तर उच्च है, वही सामाजिक समस्याओं का स्तर बढ़ने पर शैक्षिक उपलब्धि का स्तर गिरता है। सामाजिक समस्याओ का दिव्यांग विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि स्तर पर सांख्यिकी गणना एवं विश्लेषण के आधार पर प्रभाव पाया गया, अतः उक्त परिकल्पना सिद्ध हुई।

परिकल्पना क्र. 2

आर्थिक समस्याओ का दिव्यांग विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि स्तर पर प्रभाव पाया जायेगा।

आर्थिक समस्याओ से सम्बंधित प्रसरण विश्लेषण सारणी

	वर्गों का योग	Df	माध्यो का वर्ग	F
समूहों के बीच	1541.88	10	140.17	7.72
समूह के भीतर	871.31	49	18.15	
कुल	2413.19	59		

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

निष्कर्षः F तालिका का 0.05 सार्थकता स्तर मान 2.03, F तालिका का 0.01 सार्थकता स्तर मान 2.72। उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि F का मान 7.72 है जो कि F तालिका मान 0.05 और 0.01 से सार्थकता स्तर से अधिक है, अतः हमारी परिकल्पना स्वीकृत हुई।

निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों कि आर्थिक समस्याओ का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है। यदि आर्थिक समस्याएं कम है तो शैक्षिक उपलब्धि स्तर उच्च है, वही आर्थिक समस्याओ का स्तर

बढ़ने पर शैक्षिक उपलब्धि का स्तर गिरता है। आर्थिक समस्याओ का दिव्यांग विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि स्तर पर सांख्यिकी गणना एवं विश्लेषण के आधार पर प्रभाव पाया गया, अतः उक्त परिकल्पना सिद्ध हुई।

परिकल्पना क्र.3

अकादमिक समस्याओ का दिव्यांग विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि स्तर पर प्रभाव पाया जायेगा ।

अकादमिक समस्याओ से सम्बंधित प्रसरण विश्लेषण (ANOVA) सारणी

	वर्गों का योग	Df	माध्यो का वर्ग	F
समूहों के बीच	1218.47	8	152.30	6.50
समूह के भीतर	1194.72	51	23.42	
कुल	2413.19	59		

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

निष्कर्षः F तालिका का 0.05 सार्थकता स्तर मान 2.13, F तालिका का 0.01 सार्थकता स्तर मान 2.88। उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि F का मान 6.50 है जो कि F तालिका मान 0.05 और 0.01 से सार्थकता स्तर से अधिक है, अतः हमारी परिकल्पना स्वीकृत हुई।

निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि दिव्यांग विद्यार्थियों कि अकादमिक समस्याओ का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है। यदि अकादमिक समस्याएं कम है तो शैक्षिक उपलब्धि स्तर उच्च है, वही अकादमिक समस्याओ का स्तर बढ़ने पर शैक्षिक उपलब्धि का स्तर गिरता है। अकादमिक समस्याओ का दिव्यांग विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि स्तर पर सांख्यिकी गणना एवं विश्लेषण के आधार पर प्रभाव पाया गया, अतः उक्त परिकल्पना सिद्ध हुई।

परिकल्पना क्र.4

लिंग का प्रभाव दिव्यांग विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि स्तर पर दिखाई देगा ।

लिंग का प्रभाव से सम्बंधित t सारणी

वर्ग	चर	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	t मूल्य
बालक	शैक्षिक उपलब्धि	30	64.87	2.045
बालिका		30	61.58	
df = 58				

निष्कर्षः t तालिका का 0.05 सार्थकता स्तर मान 2.663, t तालिका का 0.01 सार्थकता स्तर मान 2.392। उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि t का मान 2.045 है जो कि t तालिका मान 0.05 और 0.01 से सार्थकता स्तर से कम है अतः हमारी परिकल्पना अस्वीकृत हुई। निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि दिव्यांग विद्यार्थियों कि लिंग का प्रभाव के शैक्षिक उपलब्धि पर नहीं पड़ता है। लिंग का प्रभाव दिव्यांग विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि स्तर पर सांख्यिकी गणना एवं विश्लेषण के आधार पर प्रभाव नहीं पाया गया, अतः उक्त परिकल्पना रद्द हुई।

सुझाव

दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए सुझाव निम्नलिखित हैः

1. दिव्यांग विद्यार्थियों को अपनी समस्याओ के बारे में अपने अभिभावकों एवं शिक्षकों से निःसंकोच अपनी समस्याओ का समाधान प्राप्त करना चाहिए।
2. दिव्यांग विद्यार्थियों को चाहिए कि विभिन्न शासकीय विभागों एवं समाज कल्याणकारी संस्थाओ द्वारा किये जाने वाली उद्यमिता विकास प्रशिक्षणों, कम्प्यूटर एवं टाइपिंग प्रशिक्षण तथा अन्य रोजगार मूलक प्रशिक्षणों में सम्मिलित हो, जिससे इनकी विभिन्न क्षेत्रो में अभिरुचि जागृत हो सके तथा अपने जीवन में सफल एवं

समायोजित हो सकें।

3. इन दिव्यांग विद्यार्थियों को चाहिए कि अपना समय अध्ययन के अलावा अन्य व्यवसायिक कौशल हासिल कर विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार प्राप्त करें एवं आत्मनिर्भर बन सकें।
4. इन दिव्यांग विद्यार्थियों को अपने आप को अन्य विद्यार्थीयो से किसी प्रकार से कमजोर न समझे अपना आत्मविश्वास बनाये रखे।

अभिवावको के लिए सुझाव

1. माता पिता को अपने विकलांग बालको एवं अन्य बालको में किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं करना चाहिए समान व्यवहार करना चाहिए।
2. अभिवावको को दिव्यांग विद्यार्थियों को उनकी रूचि के अनुसार ही अध्ययन क्षेत्र का चयन करने देना चाहिए ताकि वे वहाँ उचित ढंग से समायोजित हो सकें।
3. अभिवावको को दिव्यांग विद्यार्थियों के विद्यालय जा कर उनके शैक्षिक विकास एवं शैक्षिक समस्याओ को ज्ञात करना चाहिए।
4. अभिवावको को दिव्यांग बालको को निरंतर प्रोत्साहित करना चाहिए।

शिक्षकों के लिए

1. शिक्षकों को दिव्यांग विद्यार्थियों को अपनापन व सम्मान देना चाहिए।
2. दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त यंत्रो का प्रयोग करना चाहिए।
3. इन बच्चो को खेलो में, नाटकों में तथा नृत्य में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।
4. इनकी समस्याओ का समाधान धैर्य पूर्वक करना चाहिए।

अनुकरणीय अध्ययन

1. दिव्यांग बालक एवं बालिकाओ कि समायोजन क्षमता एवं उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन।
2. शहरी तथा ग्रामीण दिव्यांग विद्यार्थियों को समस्याओ का तुलनात्मक अध्ययन।
3. दिव्यांग विद्यार्थियों एवं सामान्य विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता एवं अभिरुचि का तुलनात्मक अध्ययन।
4. शिक्षकों की अभिवृत्ति की दिव्यांग विद्यार्थियों के वैक्तित्व के विकास पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
5. आवासीय विद्यालय में रहने वाले एवं परिवार में रहने वाले दिव्यांग विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता पर उनकी अभिरुचि एवं सामान्य मानसिक योग्यता के प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन।
6. दिव्यांग विद्यार्थियों के सामजिक, आर्थिक स्तर का उनके भाषायी सृजनात्मकता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन ।

सन्दर्भ सूची

1. अग्रवाल व रामनारायण अस्थाना (१९९९) मनोविज्ञान व शिक्षा में मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मंदिर, राघव मार्ग आगरा।
2. गैरेट हेनरी (१९८५) *शिक्षा व मनोविज्ञान में साँख्यिकी,* कल्याणी पब्लिशर लुधियाना।
3. कपिल, एच. के. (१९९३) *अनुसन्धान विधियाँ,* आगरा, हरि प्रसाद भार्गव।
4. पाठक, पी. डी., *शिक्षा मनोविज्ञान,* आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन।
5. पांडेय, सरिता (२००१), *मूक बधिर बालको का शैक्षिक और सामाजिक समायोजन,* गोरखपुर, वसुंधरा प्रकाशन।

6. भटनागर, सी (२००१) *शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार,* मेरठ, लॉयल बुक डीपो।
7. माथुर एस.एस. (२००४), *शिक्षा में मनोवैज्ञानिक आधार,* विनोद पुस्तक मंदिर, डॉ.रागेय राघव, आगरा।
8. शर्मा आर.ए (१६८४), *मौलिक एवं शिक्षा अनुसन्धान,* मेरठ, अंतर्राष्ट्रीय प्रकाशन भवन ।
9. अग्रवाल.जे. सी. (२०००) *भारत में उच्च शिक्षा में शैक्षिक अनुसंधान,* मोतीलाल बनारसीदास पुस्तक भवन बनारस।

****